संतोषी माता व्रत कथा-

एक बुढिय़ा के सात बेटे थे। छह कमाने वाले थे। एक निक्कमा था। बुढिय़ा माँ छहो बेटों की रसोई बनाती, भोजन कराती और जो जूठन बचता वह सातवें को दे देती थी, परन्तु वह बड़ा भोला-भाला था, मन में कुछ विचार नहीं करता था। एक दिन वह बहू से बोला- देखो मेरी माँ का मुझ पर कितना प्रेम है। वह बोली-क्यों नहीं, सबका झूठा बचा हुआ जो तुमको खिलाती है। वह बोला- ऐसा नहीं हो सकता है। मैं जब तक आंखों से न देख लूं मान नहीं सकता। बहू ने हंस कर कहा- देख लोगे तब तो मानोगे? कुछ दिन बात त्यौहार आया, घर में सात प्रकार के भोजन और चूरमे के लड्डू बने। वह जांचने को सिर दुखने का बहाना कर पतला वस्त्र सिर पर ओढ़े रसोई घर में सो गया, वह कपड़े में से सब देखता रहा। छहों भाई भोजन करने आए। उसने देखा, माँ ने उनके लिए सुन्दर आसन बिछा विभिन्न प्रकार की रसोई परोसी और प्रेम पूर्वक उन्हें खिलाया। छहों भोजन कर उठे तब माँ ने उनकी झूठी थालियों में से लड्डुओं के टुकड़े उठाकर एक लड्डू बनाया। छोटा बेटा अन्दर से सब देख रहा था । जूठन साफ कर माँ ने उसे पुकारा- बेटा, सभी भाईयों ने भोजन कर लिया । अब तू ही बाकी है, उठ तू भी खा ले। वह कहने लगा- माँ मुझे भोजन नहीं करना, मै अब परदेस जा रहा हूं। माँ ने कहा- कल जाता हो तो आज चला जा। वह बोला- हां आज ही जा रहा हूँ ।

यह कह कर वह घर से निकल गया। चलते समय स्त्री की याद आ गई। वह गौशाला में कण्डे थाप रही थी। वहाँ जाकर अपनी पत्नी से बोला- मैं परदेस जा रहा हूँ और कुछ समय बाद ही वापिस आऊंगा। तुम संतोष पूर्वक यहीं रहकर अपने धर्म का पालन करना। वह बोली- आप बिना मेरी चिन्ता किये आराम से जाओ, भगवान तुम्हारी मदद करेंगे। बस मुझे मत भूलना, अगर हो सके तो मुझे अपनी एक निशानी देते जाओ। वह बोला- मेरे पास तो कुछ नहीं, यह अंगूठी है सो ले और तुम भी अपनी कुछ निशानी मुझे दे दो। वह बोली- मेरे पास क्या है, यह गोबर भरा हाथ है। यह कह कर उसकी पीठ पर गोबर के हाथ की थाप मार दी। वह चल दिया, चलते-चलते दूर देश पहुंचा। वहां एक साहूकार की दुकान थी। वहाँ जाकर कहने लगा- भाई मुझे नौकरी पर रख लो। साहूकार को जरूरत थी, सो साहूकार ने उसे अपने यहां नौकरी पर रख लिया। साहूकार की नौकरी मिलने के बाद बुढ़िया का वह बेटा बहुत ही मेहनत और ईमानदारी के साथ वहाँ नौकरी करने लगा। कुछ दिनों में दुकान का सारा लेन-देन, हिसाब-किताब, ग्राहकों को माल बेचना सारा काम करने लगा।

सेठ ने उसकी मेहनत और इमानदारी से प्रभावित होकर, तीन महीने में ही उसे आधे मुनाफे का हिस्सेदार बना लिया। वह कुछ वर्ष में ही नामी सेठ बन गया और मालिक सारा कारोबार उस पर छोड़कर चला गया। अब बहू पर क्या बीती? सो सुनों, सास ससुर उसे दु:ख देने लगे।

सारी गृहस्थी का काम कराके उसे लकड़ी लेने जंगल में भेजते। इस बीच घर के आटे से जो भूसी निकलती उसकी रोटी बनाकर रख दी जाती और फूटे नारियल की नारेली मे पानी। इस तरह दिन बीतते रहे। एक दिन वह लकड़ी लेने जा रही थी, रास्ते मे बहुत सी स्त्रियां संतोषी माता का व्रत करती दिखाई दी। वह वहां खड़ी होकर कथा सुनने लगी और पूछा- बहनों तुम किस देवता का व्रत करती हो और उसके करने से क्या फल

मिलता है? इस व्रत को करने की क्या विधि है? यदि तुम अपने इस व्रत का विधान मुझे समझा कर कहोगी तो मै तुम्हारा बड़ा अहसान मानूंगी। तब उनमें से एक स्त्री बोली- सुनों, यह संतोषी माता का व्रत है। इसके करने से निर्धनता, दरिद्रता का नाश होता है। लक्ष्मी आती है। मन की चिन्ताएं दूर होती है। घर में सुख होने से मन को प्रसन्नता और शान्ति मिलती है। निपूती को पुत्र मिलता है, प्रीतम बाहर गया हो तो शीध्र घर आता है, कवांरी कन्या को मन पसंद वर मिले, राजद्वारे में बहुत दिनों से मुकदमा चल रहा हो खत्म हो जाता है, कलह क्लेश की निवृति हो सुख-शान्ति हो। घर में धन जमा हो, पैसा जायदाद का लाभ होता है, सभी रोग दूर हो जाते हैं तथा और जो कुछ मन में कामना हो सभी संतोषी माता की कृपा से पूरी हो जाती हैं, इसमें संदेह नहीं। वह पूछने लगी- यह व्रत कैसे किया जाए यह भी बताओ तो बड़ी कृपा होगी।

तब उस स्त्री ने उसे संतोषी माता की सारी व्रत विधि समझा दी. सब कुछ ध्यान पूर्वक सुन बुढिय़ा के लड़के की बहू चल दी। रास्ते में उसने लकड़ी का एक गठ्ठे बेच दिया और उन पैसों से गुड़-चना ले माता के व्रत की तैयारी कर आगे चली और सामने मंदिर देखकर पूछने लगी- यह मंदिर किसका है? सब कहने लगे यह संतोषी माता का मंदिर है ।

यह सुनकर वह माता के चरणों में बैठकर रोने लगी। दीन हो विनती करने लगी- माँ में निपट अज्ञानी हूं। व्रत के कुछ भी नियम नहीं जानती, मैं दु:खी हूं, हे माता जगत जननी मेरा दु:ख दूर कर, मैं तेरी शरण में हूँ। माता को दया आई – एक शुक्रवार बीता कि दूसरे को उसके पति का पत्र आया और तीसरे शुक्रवार को उसका भेजा हुआ पैसा आ पहुँचा। यह देख जेठ-जिठानी मुँह सिकोड़ने लगे। इतने दिनों में इतना पैसा आया, इसमें क्या बड़ाई? लड़के ताने देने लगे- काकी के पास पत्र आने लगे, रुपया आने लगा, अब तो काकी की खातिर बढ़ेगी, अब तो काकी बोलने से भी नहीं बोलेगी। बेचारी सरलता से कहती- भैया कागज आवे रुपया आवे हम सब के लिए अच्छा है। ऐसा कह कर आंखों में आंसू भरकर संतोषी माता के मंदिर में आ मातेश्वरी के चरणों में गिरकर रोने लगी। माँ मैने तुमसे पैसा कब माँगा है। मुझे पैसे से क्या काम है? मुझे तो अपने सुहाग से काम है। मै तो अपने स्वामी के दर्शन माँगती हूँ। तब माता ने प्रसन्न होकर कहा-जा बेटी, तेरा स्वामी आएगा। यह सुनकर खुशी से बावली होकर घर में जा काम करने लगी। अब संतोषी माँ विचार करने लगी, इस भोली पुत्री को मैने कह तो दिया कि तेरा पति आएगा, पर कैसे? वह तो इसे स्वप्न में भी याद नहीं करता। उसे याद दिलाने को मुझे ही जाना पड़ेगा। इस तरह माता जी उस बुढिय़ा के बेटे के पास जा स्वप्न में प्रकट हो कहने लगी- साहूकार के बेटे, सो रहा है या जागता है। वह कहने लगा- माता सोता भी नहीं, जागता भी नहीं हूँ कहो क्या आज्ञा है?

माँ कहने लगी- तेरे घर-बार कुछ है कि नहीं? वह बोला- मेरे पास सब कुछ है माँ-बाप है बहू है क्या कमी है। माँ बोली- भोले पुत्र तेरी बहू घोर कष्ट उठा रही है, तेर माँ-बाप उसे बहुत त्रास दे रहे हैं। वह तेरे लिए तरस रही है, तू उसकी सुध ले। वह बोला- हाँ माता जी यह तो मालूम है, परंतु जाऊं तो कैसे? परदेश की बात है, लेन-देन का कोई हिसाब नहीं, कोई जाने का रास्ता नहीं आता, कैसे चला जाऊं? माँ कहने लगी- मेरी बात मान, सवेरे नहा धोकर संतोषी माता का नाम ले, घी का दीपक जला दण्डवत कर दुकान पर जा बैठ। देखते-देखते सारा लेन-देन चुक जाएगा, जमा का माल बिक जाएगा, सांझ होते-होते धन का भारी ढ़ेर लग जाएगा। अब सवेरे जल्दी उठ भाई-बंधुओं से सपने की सारी बात कहता है। वे सब उसकी अनसुनी कर दिल्लगी उड़ाने लगे। कभी सपने भी सच होते हैं। एक बूढा बोला- देख भाई मेरी बात मान, इस प्रकार झूंठ-सांच करने के बदले माता ने

जैसा कहा है वैसा ही करने में तेरा क्या जाता है। अब बूढे की बात मानकर वह नहा धोकर संतोषी माता को दण्डवत धी का दीपक जला दुकान पर जा बैठता है। थोड़ी देर में क्या देखता है कि देने वाले रुपया लाने लगे, लेने वाले हिसाब लेने लगे। कोठे में भरे सामान के खरीददार नकद दाम दे सौदा करने लगे। शाम तक धन का भारी ढ़ेर लग गया। मन में माता का नाम ले चमत्कार देख प्रसन्न हो घर ले जाने के वास्ते गहना, कपड़ा सामान खरीदने लगा। यहां काम से निपट तुरंत घर को रवाना हुआ।

बुढ़िया की छोटी बहु बेचारी जंगल में लकड़ी लेने जाती है। लौटते वक्त माताजी क मंदिर में विश्राम करती है। वह तो उसके प्रतिदिन रुकने का जो स्थान ठहरा, धूल उड़ती देख वह माता से पूछती है- हे माता, यह धूल कैसे उड़ रही है? माता कहती है- हे पुत्री तेरा पति आ रहा है। अब तू ऐसा कर लकडिय़ों के तीन गट्ठर बना ले, एक नदी के किनारे रख और दूसरा मेरे मंदिर पर व तीसरा अपने सिर पर रख। तेरे पति को लकडिय़ों का गट्ठर देख मोह पैदा होगा, वह यहाँ रुकेगा, नाश्ता-पानी खाकर माँ से मिलने जाएगा, तब तू लकडिय़ों का बोझ उठाकर जाना और चौक मे गट्ठर डालकर जोर से आवाज लगाना- लो सासू माँ, लकडिय़ों का गट्ठर लो, भूसी की रोटी दो, नारियल के खेपड़े में पानी दो, आज मेहमान कौन आया है? बहुत अच्छा। माताजी से कहकर वह प्रसन्न मन से लकडिय़ों के तीन गट्ठर ले आई। एक नदी के किनारे पर और एक माताजी के मंदिर पर रखा। इतने में मुसाफिर आ पहुँचा। सूखी लकड़ी देख उसकी इच्छा उत्पन्न हुई कि हम यही पर विश्राम करें और भोजन बनाकर खा-पीकर गांव जाएं। इसी तरह रुक कर भोजन बना, विश्राम करके गांव को गया। सबसे प्रेम से मिला। उसी समय सिर पर लकड़ी का गट्ठर लिए वह उतावली सी आती है। लकडिय़ों का भारी बोझ आंगन में डालकर जोर से तीन आवाज देती है- लो सासूमाँ, लकडिय़ों का गट्ठर लो, भूसी की रोटी दो। आज मेहमान कौन आया है? यह सुनकर उसकी सास बाहर आकर अपने दिए हुए कष्टों को भुलाने हेतु कहती है- बहु ऐसा क्यों कहती है? तेरा मालिक ही तो आया है। आ बैठ, मीठा भात खा, भोजन कर, कपड़े-गहने पहिन। उसकी आवाज सुन उसका पति बाहर आता है।

अंगूठी देख व्याकुल हो जाता है। माँ से पूछता है- माँ यह कौन है? माँ कहती है-बेटा यह तेरी बहु है। आज १२ बर्ष हो गए, जब से तू गया है तब से सारे गांव में जानवर की तरह भटकती फिरती है। घर का काम-काज कुछ करती नहीं, चार पहर आकर खा जाती है। अब तुझे देख भूसी की रोटी और नारियल के खोपड़े में पानी मांगती है। वह लज्जित हो बोला- ठीक है माँ मैने इसे भी देखा और तुम्हें भी देखा है, अब दूसरे घर की ताली दो, उसमें रहूंगा। अब माँ बोली-ठीक है बेटा, जैसी तेरी मरजी हो सो कर। यह कह ताली का गुच्छा पटक दिया। उसने ताली लेकर दूसरे मकान की तीसरी मंजिल का कमरा खोल सारा सामान जमाया। एक दिन में राजा के महल जैसा ठाट-बाट बन गया। अब क्या था? बहु सुख भोगने लगी। इतने में शुक्रवार आया। उसने अपने पति से कहा- मुझे संतोषी माता के व्रत का उद्यापन करना है। उसका पति बोला -अच्छा, खुशी से कर लो। वह उद्यापन की तैयारी करने लगी। जिठानी के लड़कों को भोजन के लिए कहने गई। उन्होंने मंजूर किया परन्तु पीछे से जिठानी ने अपने बच्चों को सिखाया, देखो रे, भोजन के समय सब लो खटाई मांगना, जिससे उसका उद्यापन पूरा न हो। लड़के जीमने आए खीर खाना पेट भर खाया, परंतु बाद में खाते ही कहने लगे- हमें खटाई दो, खीर खाना हमको नहीं भाता, देखकर अरूचि होती है। वह कहने लगी- भाई खटाई किसी को नहीं दी जाएगी। यह तो संतोषी माता का प्रसाद है। लड़के उठ खड़े हुए, बोले- पैसा लाओ, भोली बहु कुछ जानती नहीं थी,

उन्हें पेसे दे दिए। लड़के उसी समय हठ करके इमली खटाई ले खाने लगे। यह देखकर बहु पर माताजी ने कोप किया। राजा के दूत उसके पति को पकड़ कर ले गए। जेठ जेठानी मन-माने वचन कहने लगे। लूट-लूट कर धन इकठ्ठा कर लाया है, अब सब मालूम पड़ जाएगा जब जेल की मार खाएगा। बहु से यह वचन सहन नहीं हुए। रोती हुई माताजी के मंदिर गई, कहने लगी- हे माता, तुमने क्या किया, हँसा कर अब भक्तों को रुलाने लगी? माता बोली- बेटी तूने उद्यापन करके मेरा व्रत भंग किया है। इतनी जल्दी सब बातें भुला दी? वह कहने लगी- माता भूलती तो नहीं, न कुछ अपराध किया है, मैने तो भूल से लड़कों को पैसे दे दिए थे, मुझे क्षमा करो। मै फिर तुम्हारा उद्यापन करूंगी। माँ बोली- अब भूल मत करना। वह कहती है- अब भूल नहीं होगी, अब बतलाओ वे कैसे आएंगे? माँ बोली- जा पुत्री तेरा पति तुझे रास्ते में आता मिलगा। वह निकली, राह में पति आता मिला। वह पूछती है- तुम कहाँ गए थे? वह कहने लगा- इतना धन जो कमाया है उसका टैक्स राजा ने मांगा था, वह भरने गया था। वह प्रसन्न हो बोली- भला हुआ, अब घर को चलो। घर गए, कुछ दिन बाद फिर शुक्रवार आया। वह बोली- मुझे फिर माता का उद्यापन करना है। पति ने कहा- करो। बहु फिर जेठ के लड़कों को भोजन को कहने गई। जेठानी ने एक दो बातें सुनाई और सब लड़कों को सिखाने लगी। तुम सब लोग पहले ही खटाई मांगना। लड़के भोजन से पहले कहने लगे- हमे खीर नहीं खानी, हमारा जी बिगड़ता है,

कुछ खटाई खाने को दो। वह बोली- खटाई किसी को नहीं मिलेगी, आना हो तो आओ, वह ब्राह्मण के लड़के लाकर भोजन कराने लगी, यथा शक्ति दक्षिणा की जगह एक-एक फल उन्हें दिया। संतोषी माता प्रसन्न हुई। माता की कृपा होते ही नवें मास में उसके चन्द्रमा के समान सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ। पुत्र को पाकर प्रतिदिन माता जी के मंदिर को जाने लगी। माँ ने सोचा- यह रोज आती है, आज क्यों न इसके घर चलूँ? इसका आसरा देखूँ तो सही। यह विचार कर माता ने भयानक रूप बनाया, गुड़-चने से सना मुख, ऊपर सूंड के समान होठ, उस पर मक्खियां भिन्न-भिन्न कर रही थी। देहली पर पैर रखते ही उसकी सास चिल्लाई- देखो रे, कोई चुडैल डाकिन चली आ रही है, लड़कों इसे भगाओ, नहीं तो किसी को खा जाएगी।

लड़के भगाने लगे, चिल्लाकर खिड़की बंद करने लगे। बहु रौशनदान में से देख रही थी, प्रसन्नता से पगली बन चिल्लाने लगी- आज मेरी माता जी मेरे घर आई है। वह बच्चे को दूध पीने से हटाती है। इतने में सास का क्रोध फट पड़ा। वह बोली- क्यों इतनी उतावली हुई है? बच्चे को पटक दिया। इतने में माँ के प्रताप से लड़के ही लड़के नजर आने लगे। बहु सास से बोली- माँ मै जिसका व्रत करती हूँ यह वही संतोषी माता है। इतना कहकर झट से सारे किवाड़ खोल दिए। सबने माता जी के चरण पकड़ लिए और विनती कर कहने लगे- हे माता, हम मूर्ख हैं, अज्ञानी हैं, तुम्हारे व्रत की विधि हम नहीं जानते, व्रत भंग कर हमने बड़ा अपराध किया है, जग माता आप हमारा अपराध क्षमा करो। इस प्रकार माता प्रसन्न हुई। बहू को प्रसन्न हो जैसा फल दिया, वैसा माता सबको दे, जो पढ़े उसका मनोरथ पूर्ण हो।

संतोषी माता विधि व्रत -

हिन्दु धर्म में शुक्रवार का व्रत तीन तरह से किया जाता है. इस दिन भगवान शुक्र, माता संतोषी तथा वैभव लक्ष्मी का पूजन किया जाता है. तीनों ही व्रतों की विधियाँ अलग - अलग हैं. संतोषी माता का व्रत करने वालों के लिए व्रत – विधि इस प्रकार है.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार माता संतोषी भगवान श्रीगणेश की पुत्री हैं. इसलिए उनकी प्रसन्न्ता परिवार में सुख-शान्ति तथा मनोंकामनाओं की पूर्ति कर शोक विपत्ति चिन्ता परेशानियों को दूर कर देती हैं.

सुख-सौभाग्य की कामना से माता संतोषी के 16 शुक्रवार तक व्रत किये जाने का विधान है.

- सूर्योदय से पहले उठकर घर की सफ़ाई इत्यादि पूर्ण कर लें.
- स्नानादि के पश्चात घर में किसी सुन्दर व पवित्र जगह पर माता संतोषी की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें.
- माता संतोषी के संमुख एक कलश जल भर कर रखें. कलश के ऊपर एक कटोरा भर कर गुड़ व चना रखें.
- माता के समक्ष एक घी का दीपक जलाएं.
- माता को अक्षत, फ़ूल, सुगन्धित गंध, नारियल, लाल वस्त्र या चुनरी अर्पित करें.
- माता संतोषी को गुड़ व चने का भोग लगाएँ.
- संतोषी माता की जय बोलकर माता की कथा आरम्भ करें.
- इस व्रत को करने वाला कथा कहते व सुनते समय हाथ में गुड़ और भुने चने रखें.
- कथा की समाप्ती के पश्चात श्रद्धापूर्वक सपरिवार आरती करें.
- कथा व आरती के पश्चात हाथ का गुड़ व चना गौमाता को खिलाएं, तथा कलश पर रखा हुआ गुड़ चना सभी को प्रशाद के रुप में बांट दें.
- कलश के जल का पूरे घर में छिड़काव करें और बचा हुआ जल तुलसी की क्यारी में ड़ाल दें.

इस प्रकार विधि पूर्वक श्रद्धा और प्रेम से प्रसन्न होकर 16 शुक्रवार तक नियमित उपवास रखें. (उपवास में एक समय मीठे भोजन का विधान है)

शीघ्र विवाह की कामना, व्यवसाय व शिक्षा के क्षेत्र में कामयाबी और मनोवांछित फ़लों की प्राप्ति के लिए महिला व पुरुष दोनो की एक समान यह व्रत धारण कर सकतें हैं.

<u>इस व्रत में बरतें विशेष सावधानीः-</u>

- इस दिन न तो खट्टी वस्तु खाएं और न ही स्पर्श करें.
- इस दिन केवल व्रतधारी के लिए ही नही अपितु परिवार के हरेक सदस्य के लिए खट्टी वस्तु वर्जित मानी गयी गई है. इसलिए घर में खट्टी वस्तु बननी ही नही चाहिए.
- खट्टी वस्तु का यहाँ तक प्रयोग वर्जित माना गया है कि पूजा व घर में खट्टे फ़लों को भी इस्तेमाल नही करना चाहिए.
- परिवार में ही नही अपितु किसी बाहरी व्यक्ति को भी इस दिन खट्टी वस्तु नही देना चाहिए.

<u>उद्यापनः-</u>

16 शुक्रवार का व्रत करने के बाद, अंतिम शुक्रवार को व्रत का उद्यापन करना चाहिए. इसके लिए उपरोक्त विधि से माता संतोषी की पूजा कर 8 बालकों (लड़को) को भोजन के लिए आमंत्रित करें. अढ़ाई सेर आटे का खाजा, अढ़ाई सेर चावल की खीर तथा अढ़ाई सेर चने के साग का भोजन पकाना चाहिए. यह भोजन बालकों को बहुत ही श्रद्धा व प्यार से कराएं, तथा केले का प्रशाद दें.(बालकों को एक दिन पहले ही बता दें की आज के दिन अर्थात् पूजा वाले दिन वह कोई खट्टी वस्तु न खाएं, और स्वयं भी ध्यान रखें कि न तो कोई खट्टी चीज़ खाएं और न किसी को खाने को दें.) भोजन के पश्चात उन्हें यथाशक्ति दक्षिणा दें. दक्षिणा में उन्हें पैसे न देकर कोई वस्तु दक्षिणा में दे कर विदा करें.

इस प्रकार विधि-विधान से पूजन करने से माता प्रसन्न होकर अपने भक्तों के दुःख दारिद्रय को दूर कर, उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण करती हैं.